Impact Factor-6.261

ISSN-2348-7

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

SPECIAL ISSUE

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

Guest Editor
Dr.Archana Pardeshi
Dr.Rameshwar Bangad
Dr.Avinash Jadhav

Chief Editor
Dr.Dhanraj T.Dhangar
Assist.Prof.(Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College, Yeola, Dist.Nashik (M.S.)

PRINCIPAL
Shivaji College, HINGOLI

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
February-2019 Special Issue –2

इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

Guest Editor:
Dr. Archana Pardeshi
Dr. Rameshwar Bangad
Dr.Avinash Jadhav
Navgan College, Parli-Vaijnath, Dist.Beed

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi),
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 800/-

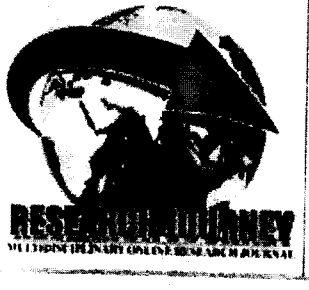

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

PRINCIPAL

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATI

Editorial Board

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Co-Editors -

Mr.Tufail Ahmed Shaikh- King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh. **Saudi**
Dr. Anil Dongre - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon

- **Dr. Shailendra Lende** - R.T.M. Nagpur University, Nagpur **[M.S.] India**
- **Dr. Dilip Pawar** - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik.
- **Dr. R. R. Kazi** - North Maharashtra University, Jalgaon.
- **Dr.Gholap Bapu g** – Navgan College, **Parli-Vaijnath, Dist.Beed (M.S.)**
- **Prof. Sushant Naik** - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, **Goa, India**
- **Dr. G. Haresh** - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur **[M.S.] India**
- **Dr. Munaf Shaikh** - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon
- **Dr. Samjay Kamble** -BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College
- **Prof. Vijay Shirsath** - Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon **[M.S.]**
- **Dr. P. K. Shewale** - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul
- **Dr. Ganesh Patil** - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik **[M.S.]**
- **Dr. Hitesh Brijwasi** - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon **[M.S.]**
- **Dr. Sandip Mali** - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar
- **Prof. Dipak Patil** - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda [

Advisory Board -

- **Dr. Marianna kosic** - Scientific-Cultural Institute, Mandala, **Trieste, Italy.**
- **Dr. M.S. Pagare** - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University,
- **Dr. R. P. Singh** -HoD, English & European Languages, University of Lucknow
- **Dr. S. M. Tadkodkar** - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University,
- **Dr. Pruthwiraj Taur** - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- **Dr. N. V. Jayaraman** - Director at SNS group of Technical Institutions,**Coimbatore**
- **Dr. Bajarang Korde** - Savitribai Phule Pune University **Pune, [M.S.] India**
- **Dr. Leena Pandhare** - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya,
- **Dr. B. V. Game** - Act. Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -

- **Dr. J. S. More** – BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College,
- **Dr. S. B. Bhambar,** BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- **Dr. Uttam V. Nile** - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS
- **Dr. K.T. Khairnar**– BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College,
- **Dr. Vandana Chaudhari** KCE's College of Education, Jalgaon
- **Dr. Sayyed Zakir Ali** , HOD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College,
- **Dr. Sanjay Dhondare** – Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- **Dr. Amol Kategaonkar** – M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College,

Published by –
© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane,
Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik
Email : swatidhanrajs@gmail.com
Website : www.researchjourney.net **Mobile :** 9665398258

PRINCIPAL
Shivaji College, SINNOR

SHIVAJI COLLEGE

16	'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में आदिवासी विमर्श	– डॉ. व्यंकट किशनराव पाटील	62
17	नारी का बदला हुआ रुप : एक विवेचन	– प्रा.डॉ.एस.एस.कदम	64
18	इक्कीसवीं सदी के काव्य में स्त्री और संवेदना	– डॉ.उर्मिला भिकाजीराव शिंदे	69
19	नालासोपारा में चित्रित थर्ड जेंडर की मर्मान्तक पीड़ा	– डॉ चांदणी लक्ष्मण पंचांगे	71
20	संजीव के कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श	– प्रा. डॉ. पवार राजाभाऊ श्रीहरी	73
21	'21 वीं सदीं की हिन्दी कहानियों में स्त्री की वदलती दिशा''	– डॉ.दीपा राग	76
22	दलित चेतना	– डॉ. विलास कांबळे	78
23	प्रवासी कहानी साहित्य में स्त्री–पुरूष संबंध : तेजेंद्र शर्मा की कलम से	– सहा.प्रा. अमर आनंद आलदे	80
24	'संजीव के उपन्यासों में आदिवासी जीवन'	-प्रा. जाधव जे.बी.	85
25	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में उदय प्रकाश का साहित्य	– प्रा.युवराज राजाराम मुळये	88
26	जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में मानविय संवेदना के स्वर	–प्रा. भेंडेकर एन.एस.	93
27	**इक्कीसवीं सदी में आदिवासी कविताओं में कवयित्रियों**	**– प्रा.कांबळे एस.एस.**	**96**
28	आज भी खरे हैं तालाबष एक प्रेरणास्त्रोत	– प्रा.महेश नाना भोपळे	99
29	संजीव – के "खोज" कथा संग्रह में – संवेदना.	–प्रा. अविनाश बी. अहिरे	105
30	डॉ. सी.बी. भारती की कविताओं में दलित जीवन का चित्रण	– प्रा. शिंदे संतोष	109
31	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में स्त्रियाँ	– प्रा. शेख साबेर	112
32	दूधनाथसिंह के 'आखिरी कलाम' उपन्यासों में व्यक्त समस्याएं	– नदाफ अजद्दोरीन	116
33	सुषिला टाकभौर की कविता : संवेदना के स्वर	– मन्नाडे रमा धनराज	118
34	नासिरा शर्मा कृत उपन्यास 'अक्षयवट' में व्यक्त सामाजिक	– वानखेडे विलास कोंडीबा	122
35	इक्कीसवीं सदी के कथा साहित्य पर शिवानी की स्त्री	–प्रा. शेख गणी गफुरसाहेब	125
36	मिथिलेश्वर के कहानी में नारी विमर्श	– किशोर श्रीमंत ओहोळ	128
37	इक्कीसवीं सदी के महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों	– श्रीहरी पंढरीनाथ गुट्टे	130

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal* ISSN 2348-
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013) Febru
Special Issue -2- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

इक्कीसवीं सदी में आदिवासी कविताओं में कवयित्रियों का अभिव्यक्त आ

प्रा.कांबळे एस.एस.
हिन्दी विभाग
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली.

इक्कीसवीं सदी में प्रगति और उन्नति हो रही है। भारतीय समाज व्यवस्था प्रगति की और अग्रसर हो रही है। भारत में शिक्षा का बदलता प्रभाव और भारतीय संविधान के बल पर महिलाओं को सभी प्रकार के अधिकार प्राप्त हो रहे हैं। लेकिन सही मायने में उसमें की यथार्थता महिलाएँ ही जान सकती है। महिलाओं को कितने अधिकार, घर, परिवार और समाज द्वारा दिए गए है, यह एक गंभीर चिंतन का विषय है। 'जिसका दर्द वहीं जाने' के अनुसार साहित्य जगत् में महिलाओं के दुखी जीवन और अधिकारों की बात महिला साहित्यकारों के द्वारा हो रही है।

भारतीय समाजव्यवस्था में महिलाएँ हमेशा उपेक्षित ही रही है। उनका सदियों से शोषण किया गया। भारत में अंग्रेज आने के पश्चात शिक्षा व्यवस्था, कानून व्यवस्था, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य का ह्रास धीरे–धीरे होता गया। अंग्रेजों के इन नये विचारों के कारण परम्परागत मूल्य व्यवस्था का ढाँचा ढहना शुरू हुआ था। पश्चात् आज़ाद भारत में शिक्षा व्यवस्था खुली हो गयी। भारतीय संविधान में सबको शिक्षा का अधिकार दिया गया । आज भारतीय महिलाएँ शिक्षा लेकर अलग–अलग क्षेत्रों में अपना करतब दिखा रही हैं। पुरूषों के कंधों को कंधा मिलाकर अलग–अलग क्षेत्रों में अग्रसर होने लगी है। इक्कीसवीं सदी की बदलती राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों तथा शिक्षा के प्रचार–प्रसार ने स्त्री जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है। इसी सदी की महिला साहित्यकारों ने अपने समय और समाज की नब्ज को पहचान संवदेना के साथ अभिव्यक्त किया है। आदिकाल से लेकर वर्तमान समय तक पुरूष–प्रधान समाज व्यवस्था में घूटती–तड़पती नारी की त्रासदी का वर्णन हिन्दी साहित्य में मिलता है। हिन्दी साहित्य में आदिवासी जीवन लगभग उपेक्षित ही रहा है। आदिवासी स्त्री अपने परिवार के लिए पुरूषों की तरह जी तोड़ मेहनत करती है।

आदिवासी समाज सदियों से जातिगत भेद, वर्णव्यवस्था, एवं विदेशियों के आक्रमणों के कारण दूर–दराज जंगलों में और पहाडों पर खदेड़ा जा रहा है। वह जंगलों में रहने के कारण मूलभूत सुविधाओं से वंचित रहा है। अज्ञानता एवं अंधाविश्वास से जुझ रहा है। आदिवासी प्रकृति के पूजक होते है। और जंगल, पहाड, सुर्य एवं नदियों की आराधना करते हैं। आदिवासी अपने–अपने भुभाग में अपने अधिकार एवं हक के प्रति लड़ रहे है। अस्तित्व के लड़ाई के लिए विद्रोह कर रहा है। शोषण के खिलाफ लड़ रहा है।

आदिवासीयों के प्रेरणा स्त्रोत बिरसा मुंडा, तिलका मांजी झलकारी–बाई, कालीबाई, टंट्या भिल आदि श्रेष्ठ क्रांतिकारियों से प्रेरणा ले रहे हैं। हिन्दी के सभी साहित्य की विधाओं में आदिवासियों के जीवन पर प्रकाश डाला जा रहा है। प्रकृति के गोद में जीवनयापन करनेवाले आदिवासी भले ही 'जंगल के दावेदार' कहे जाते है, लेकिन यथार्थ में वे विस्थापन की आड में जंगलों में खदेडे जा रहे है।

आदिवासी विमर्श को इक्कीसवीं सदी की महिला कवयित्रियों ने बडी गहराई के साथ चित्रित किया है। आदिवासीयों के दुख दर्द का जीवन्त एवं यथार्थ चित्रण कर रही है। आदिवासी स्त्री–पुरूष के बनाए हुए ढाँचे को लाँघने का प्रयत्न कर रही है। – 'क्या तुम जानते हो' कविता में निर्मल पुतुल कहती है–

"बता सकते हो
सदियों से अपना घर तलाशती
एक बेचैन स्त्री को
उसके घर का पता?"[1]

समाज में परिवर्तन धीरे–धीरे होता है। आदिवासी नारी सजग होकर अन्याय, अत्याचार एवं शोषण का विरोध कर रही है। उसमें वेदना विद्रोह एक साथ दिखाई देता है। स्त्री जीवन के अंतिम पलों तक अपने घरवालों की सेवा करती है। सच तो यह है की उसका अपना घर नही होता। निर्मल पुतुल कहती है–

"धरती के इस छोर से छोर तक

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

मुट्ठी भर सवाल लिये मैं दौडती–हाँफती–भागती
तलाश रही हूँ सदियों से निरंतर अपनी जमीन अपना घर
अपने होने का अर्थ।"[2]

ग्रेस कुजूर ने अपनी पहचान के संघर्ष को अपने स्वभिमान से जोड़कर अस्मिता संघर्ष और मूल्यों का पर्याय वना देती है। आदिवासी महिला विरांगना 'सीनगी दई ने अंग्रजों से विद्रोह कर उनसे भीडी थी। आज वह आदिवासी महिलाओं के लिए शौर्य का प्रतीक है, प्रेरणा स्त्रोत है।'

कवयित्री ग्रेस कजुर 'एक और जनी शिकार' में सीनगी दई को याद कर लिखती है–

"और अगर
अव तुम्हारे हाथों के
अंगुलाई थरथराई
तो जान लो
मैं वनूँगी एक बार और
सीनगी दई
बाँधूगी फेटा
और कसेगी फिर से
बेतरा की गांठ
नही छुपेगी अब
किसी ग्वालिन की साठ–गांठ
सच!!
वहुत जरूरत है झारखंड में
फिर एक बार
एक जबरदस्त
जनी शिकार।"[3]

ग्रेस कुजुर कहती है कि अपने असित्व के लिए संघर्ष करना जरूरी है। संघर्ष करते समय वहुत सारी मुसिबतों का सामना करना पडता है। कोई साथ दे या ना दे वीरांगनाओं की यादें उनका वल है, शक्ति है।

वर्तमान में सफेद पोसी लोग आदिवासियों का शोषण करते है। अन्याय, अत्याचार करते है, उनकी नजरों में आदिवासी जंगली है, अनाडी है, पिछडे है, उनका जितना हो सके उतना मजाक उड़ाते हैं। सभी सफेद–पोशी के नजरों में आदिवासी अमंगल है, इस सफेदपोशियों के दोगलेपन की पोल–खोल करते हुए निर्मला पुतुल कहती है–

"मेरा सव कुछ अप्रिय है उनकी नजर में
प्रिय है तो बस मेरे पसीने से पुष्ट हुए अनाज के दाने
जंगल के फुल, फल, लकडियाँ
खेतों में उगी सब्जियाँ घर की मुर्गिया
उन्हे प्रिय है
मेरी गदराई देह
मेरा माँस प्रिय है उन्हें"[4]

आदिवासी समाज के कुछ पुरूषों की मानसिकता नारी को लेकर भयंकर विकृत दिखाई देती है। वह नारी को सिर्फ भोग की वस्तु मानते हैं। नारी को छलते हैं, उसके साथ षड़यंत्र करते हैं। इस अवस्था को निर्मला पुतुल इस तरह शब्दबद्ध करती है–

"जो एक छोड दुसरी
दुसरी छोड़
तीसरी तक को उठा लाते हैं
और बिठा देते है घर
जरूरत बस
मन भर जाने की होती है।"[5]

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)

ISSN : 2348-7143
February-20

सारांश

कहा गया था कि इक्कीसवी सदी महिलाओं की सदी होगी। लेकिन यथार्थ यह है कि, नारी मुक्ति की स्थिति दयनीय, और लाचार दिखाई देती है। हर क्षेत्र में महिला पुरूष के तुलना में पिछे हैं। स्त्री पुरूष का भेद मिटाना होगा, उसे बराबरी का हिस्सा देना होगा। समानता का अधिकार देना होगा। आदिवासी साहित्य में स्त्री जीवन के अच्छे और सुखद भविष्य की उम्मीद की जा सकती है। आदिवासी कवयित्री अपना अलग प्रकार का योगदान दे रही है। आज नारी दुखी जीवन संघर्ष एवं अपना पति, बच्चे के प्रति उत्तरदायित्व एवं प्रेम को बखुबी से निभा रही है। परिश्रम का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए प्रेरणा स्त्रोत बन रही है।

संदर्भ

1) नगाडे की तरह बजते शब्द–निर्मल पुतुल पृष्ठ क्र. 8
2) नगाडे की तरह बजते शब्द–निर्मल पुतुल पृष्ठ क्र. 30
3) आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी– सं. रमणिका गुप्ता.
4) नगाडे की तरह बजने शब्द – निर्मल पुतुल. पृ. क्र 35
5) पंचशील शोध समीक्षा (त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका) जनवरी/मार्च 1992–111.

Principal
Shivaji College, Hingoli
Tq.Dist.Hingoli (MS)